सामाजिक संरचना के तत्व
(Elements of Social Structure)

सामाजिक संरचना शब्द का प्रयोग सबसे पहले हर्बर्ट स्पेंसर ने अपनी पुस्तक "Principles of Sociology" में किया था। जिस प्रकार मानव शरीर अनेक कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। उसी प्रकार समाज भी संरचना से बना होता है। दुर्खीम ने अपनी पुस्तक "The rules of Sociological Methods" में संरचना शब्द का प्रयोग किया था। वास्तव में सामाजिक संरचना की इकाई व्यक्ति है। सामाजिक संरचना किसी भी समाज में अपने लोकाचार, इतिहास या किसी सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता की परवाह किये बिना मौजूद रहेगी। उदाहरण के लिए - परिवार समाज में हमेशा से ही रहा है चाहे उसके स्वरूप में परिवर्तन क्यों न हो गया हो, या हम सत्ता को अपने उदाहरण के तौर पर ले सकते है। विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से सामाजिक संरचना की परिभाषा दी है:—

रेडक्लिफ ब्राउन:—

"सामाजिक संरचना स्थानीयता से प्रभावित होती है।"

गिन्सबर्ग:—

"सामाजिक संरचना का अध्ययन सामाजिक संगठन से संबंधित है जो कि समूहों, संघों और संस्थानों के प्रकार है।"

कार्ल मैनहाइम:—

"सामाजिक संरचना परस्पर क्रिया करती हुई सामाजिक शक्तियों का एक जाल है। सामाजिक संरचना एक जीवित संरचना है।"

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना की इकाई व्यक्ति है। सामाजिक इकाइयां जैसे कि समूह, संस्था, परिवार, सामाजिक प्रतिमान आदि की क्रमबद्धता को

सामाजिक संरचना कहते है। सामाजिक संरचना के तत्व को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तरह से स्पष्ट किए है जो निम्नलिखित है:—

पारसन्स के अनुसार सामाजिक संरचना के तीन तत्व है:— ① नातेदारी
② सत्ता तथा
③ धर्म।

रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना के तीन तत्व है:— ① नातेदारी,
② आर्थिक संगठन तथा
③ धर्म।

जॉनसन के अनुसार सामाजिक संरचना के चार तत्व है:— ① विभिन्न प्रकार के छोटे सामाजिक समूह,
② भूमिका,
③ मानदंड तथा
④ सांस्कृतिक मूल्य।

लाइट और कलर के अनुसार सामाजिक संरचना के चार तत्व है:— ① प्रस्थिति,
② भूमिका,
③ समूह तथा
④ संस्था।

सामाजिक संरचना के तीन महत्वपूर्ण तथ्य:—
① आदर्श नियम,
② सामाजिक प्रस्थिति तथा
③ सामाजिक भूमिका।

विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक संरचना के बहुत सारे तत्व बताए है जिसको संगठित होने से सामाजिक संरचना बनी रहती है।